21-28-29

हिन्दी–अनुशीलन

(पीयर रिव्यूड व यूजीसी केयर से अनुमोदित जर्नल)

वर्ष 62 मार्च 2020 अंक 1 ISSN : 2249-930X

परामर्शदाता

प्रो. कमल किशोर गोयनका
प्रो. सुरेन्द्र दुबे
प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित

प्रधान संपादक

प्रो. नंदकिशोर पाण्डेय

संपादक

डॉ. नरेन्द्र मिश्र

संपादन सहयोग

डॉ0 निर्मला अग्रवाल
प्रो0 मीरा दीक्षित

भारतीय हिन्दी परिषद् प्रयाग

30

हिन्दी अनुशीलन

(पीयर रिव्यूड व यूजीसी केयर से अनुमोदित जर्नल)

ISSN : 2249-930X

प्रकाशक : डॉ0 निर्मला अग्रवाल, प्रबंधमंत्री, भारतीय हिन्दी परिषद्
हिन्दी–विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
Website- www.bhartiyahindiparishad.com
Email- hindianusheelan@gmail.com

मूल्य : रु0 50.00

अक्षर संयोजन : जितेन्द्र कुमार मिश्र, मो0– 09452365928
मुद्रक : नागरी प्रेस, अलोपीबाग, इलाहाबाद

अनुक्रम

1. विमर्श
प्रो० नंदकिशोर पाण्डेय 7

2. संवाद
डॉ० नरेंद्र मिश्र 18

3. रमेशचन्द्र शाह की आलोचना दृष्टि
डॉ० अखिलेश कुमार शंखधर 28

4. समकालीन हिन्दी आलोचना का परिदृश्य
डॉ० नीलम राठी 33

5. कालजयी उपन्यास : आपका बंटी
डॉ० नीतू परिहार 42

6. कामायनी में युगबोध
डॉ० आशीष सिसोदिया 49

7. शेखर एक जीवनी : क्रांतिकारी व्यक्ति के स्वतंत्रता की खोज की कहानी
डॉ० उर्मिला सिंह 56

8. रागदरबारी का समाजशास्त्र
डॉ० विजय कुमार प्रधान 63

9. राम करहु तेहि के उर डेरा
डॉ० राजकुमार उपाध्याय मणि 68

10. मीरा के व्यक्तित्व कृतित्व की एक झलक
डॉ० अरविन्द कुमार जोशी 78

11. सूफी संतों की समन्वय साधना
डॉ० सत्यपाल तिवारी 86

12. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की रचनाधर्मिता
डॉ० मुकेश कुमार 98

13. हिन्दी नाटक और अभिनेयता के प्रश्न
डॉ० सत्येन्द्र कुमार दुबे 103

14. कालजयी काव्य कृति कामायनी
डॉ० चन्द्रकान्त तिवारी 109

कालजयी उपन्यास : 'आपका बंटी'

डॉ0 नीतू परिहार

कालजयी रचनाएँ हिंदी साहित्य में ही नहीं समस्त पाठकों के लिए रुचिकर होती है। कई ऐसी रचनाएँ हैं जिनको सिर्फ साहित्य का विद्यार्थी ही नहीं बल्कि सामान्य पाठक भी पढ़ता है और काव्य–रस का आनंद लेता है।

मन्नू भंडारी ऐसी ही लेखिका हैं जिसने अपने लेखन से साहित्य प्रेमी के साथ–साथ उन पाठकों को भी प्रभावित किया जो सिर्फ सामान्य पाठक हैं। उनका 'आपका बंटी' उपन्यास 70 के दशक में आया। यह ऐसी ज्वलंत समस्या पर लिखा गया जो आज भी जस की तस है। बढ़ती महत्वाकांक्षा ने मनुष्य को इस कदर बदल दिया है कि वे परिवार से अधिक महत्व पैसे और अपने कैरियर को देने लगे हैं। आज के परिदृश्य में देखें तो एकल परिवारों की बढ़ती संख्या परिवार को अधिक विघटित कर रही है। पति–पत्नी दोनों ही नौकरी करने वाले हैं वहाँ बच्चों की जिम्मेदारी किसी एक के द्वारा निबाहना संभव नहीं। भारतीय परिवारों में ये संस्कार पुरुषों को अब भी नहीं दिये जाते कि परिवार–बच्चों की जिम्मेदारी उनकी भी है। सिर्फ पैसा कमा लेने से उनका दायित्व पूर्ण नहीं हो जाता। जहाँ स्त्रियाँ आज घर से निकल वित्तीय खर्चों में बराबर हाथ बँटा रही हैं, वहाँ पुरुषों को भी पारिवारिक दायित्वों में हाथ बँटाने का काम सहर्ष करना चाहिए। वरना, पारिवारिक विघटन, रोजमर्रा का जीवन बेपटरी होना लाजमी है।

'आपका बंटी' उपन्यास मन्नू भंडारी का तलाकशुदा दाम्पत्य जीवन पर आधारित है। इससे पहले इस विषय पर शायद ही कोई उपन्यास लिखा गया हो। अतः इसे पहला तलाकशुदा–दाम्पत्य जीवन पर आधारित उपन्यास कह सकते हैं। इस उपन्यास को पढ़ने के साथ ही पाठक 'बंटी' 'शकुन' का न रह कर हम सब का हो जाता है। 'बंटी' का यह साधारणीकरण ही इस उपन्यास की सबसे खास बात है।

उपन्यास में अगर देखा जाए तो मुख्य पात्र बंटी और शकुन ही केन्द्र में हैं। बंटी के पिता अजय का कहीं–कहीं जिक्र है। उपन्यास बंटी के जीवन के इर्द–गिर्द ही रचा गया है। पहली बार पढ़ने से सहृदय पाठक का जुड़ाव बंटी से होता है और शकुन के प्रति भी संवेदना जागृत होती है।

ऐसा लगता है जैसे सारा दोष अजय का ही है शकुन और बंटी के जीवन को नष्ट करने का। उसने शकुन और बंटी को अकेला छोड़ दिया। शकुन अपना सारा जीवन बंटी के इर्द–गिर्द ऐसे बुन लेती है कि बंटी को माँ और बाप दोनों का प्यार दे सके।

लेकिन जब उपन्यास दूसरी, तीसरी बार पढ़ते हैं तो शकुन की मानसिकता, उसकी महत्वाकांक्षाएँ और उसकी कुंठाएँ भी सामने आने लगती हैं। शायद एक–दूसरे को नीचा दिखाने में बंटी को हथियार की तरह इस्तेमाल किया जा रहा है। शकुन पढ़ी–लिखी आत्मनिर्भर स्त्री है। इसलिए उससे ऐसी अपेक्षा तो नहीं ही की जा सकती कि वह सारी जिन्दगी अजय के लिए आँसू बहाती रहे। अजय से तलाक के बाद वह भी डॉ. जोशी से विवाह का फैसला कर लेती है। अजय भी दूसरा विवाह कर अपने नये जीवन में खुश है। शकुन को भी यह अधिकार है कि वह भी अपना जीवन नये सिरे से प्रारम्भ करे। दोनों ही अपने–अपने बारे में सोचते जा रहे हैं, किन्तु इन दोनों के लिए 'बंटी' धीरे–धीरे अवांछनीय होने लगता है। निर्मला जैन ने उपन्यास के इस मर्म को सही छुआ– "उपन्यास में, शकुन और अजय के बीच सेतु न बन पाने की स्थिति में बंटी की स्थिति एक ऐसे 'ऊपर से थोपे हुए', 'अनावश्यक प्रसंग' जैसी हो जाती है जिसे एक न एक दिन समाप्त होना ही था। सब लोग जैसे इसी दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे। खुद शकुन भी कहीं–न कहीं ऐसा चाहने लगी थी।" यही इस उपन्यास का सबसे महत्वपूर्ण भाग है जहाँ हम बंटी को सबसे कटा हुआ, अलग, उद्दण्ड, गुमशुम, भयभीत आदि विभिन्न भावों में देखने के साथ भीतर तक स्वयं को उसके दुःख में दुखी महसूस करते हैं।

बंटी के चरित्र को प्रारम्भ से देखें तो उपन्यास के प्रारम्भ के बंटी और उपन्यास के अन्त तक आते–आते बंटी के चरित्र के विभिन्न पक्ष दिखाई देते हैं। माँ का कॉलेज जाना बंटी को बुरा नहीं लगता, लेकिन कॉलेज के बाद शाम को भी अगर माँ बंटी को अपने साथ न ले जाए तो उसका मुँह उतर जाता। स्कूल खुले हुए हों तो बंटी का मन लग जाता था पर छुट्टियों में उसका दिन काटना भारी हो जाता। माँ के साथ कॉलेज वह जाता नहीं क्योंकि कॉलेज में माँ, माँ नहीं सिर्फ प्रिंसिपल हो जाती है। वह घर में ही इधर–उधर घूमता कभी अपने पड़ोसी मित्र टीटू के घर चला जाता तो कभी अपने बगीचे के फूल पौधे देख लेता है। माँ के चले जाने पर भी घर में फूफी है जिस पर बंटी अपना रौब चला सकता है। मम्मी के जाने के बाद बंटी, घर और फूफी पर अपना पूरा अधिकार जमाता है–"बंटी ने अपनी अलमारी खोली। ......उसने नई वाली बंदूक निकाली, खूब बड़ी–सी और एकदम आँगन में झाडू लगाती हुई फूफी की पीठ में नली लगा दी। बोला, "अब कहेगी कभी लड़की, कर दूँ शूट? गोली से उड़ा दूँगा, हाँ, याद रखना। अत्यधिक लाड़ में या बहुत नाराजगी में बंटी फूफी को तू ही कहता है।"[2]

चूंकि घर बंटी का है इसलिए वह मन–मर्जी से रहता, जो मन में आता वही करता। यहाँ तक की घर के बगीचे पर भी बंटी का एकाधिकार है। बंटी ने माली के साथ मिल कर कई पौधे लगाए तथा उनकी पूरी देख–रेख भी करता। कई–कई घण्टों बगीचे में साफ–सफाई करता, क्यारियों में पानी देता, पाइप से पौधे को धोता। बगीचे से फूल अगर कोई तोड़ सकता है तो वह स्वयं बंटी और किसी को भी इजाजत नहीं है। बंटी को हर पौधे, हर फूल से गहरा लगाव है।

बंटी अपने पापा को याद करता है उनसे मिलने का उसका बहुत मन करता है। टीटू को जब भी अपने माँ–बाप के साथ देखता तो बंटी को भी लगता कि उसके पापा उसके साथ रहे। वह सोचता कि क्या पापा–मम्मी की लड़ाई कभी खत्म नहीं हो सकती। जबकि वो तो जब भी टीटू या कुन्नी से झगड़ता है तो दो–तीन दिन में फिर

(यू0जी0सी0 केयर लिस्ट में शामिल) ISSN : 2249-930X

से बात करने लगता। बच्चे के मन में तरह–तरह के प्रश्न आते हैं कि आखिर क्या बात है जो लड़ाई होती है। होती भी है तो फिर से बात क्यों नहीं हो सकती, अपने आप को क्या समझदार कहने वाले बड़े लोग भी झगड़ते हैं? तरह–तरह के प्रश्न बंटी के बाल मन को विचलित किए रहते हैं। वह कई बार सोचता है कि माँ से पूछेगा पापा के बारे में, पर ना जाने क्यूँ पापा की बात करते ही माँ उदास हो जाती है। माँ का चेहरा देखते ही वह सहम जाता। इतना सब के बाद भी वह माँ को खुश रखने की, उसका समझदार बेटा बनने की कोशिश करता है। माँ के कॉलेज से आने पर वह माँ के चारों ओर घूमता रहता, अपनी दिन भर की बातें बताता, फूफी की शिकायत करता। उसे खुशी होती कि अब माँ कहीं नहीं जाएगी। लेकिन जब देखता है कि माँ शाम को तैयार हो कहीं जा रही है उसके बिना तो बंटी रूआंसा हो जाता है। मम्मी जब उसे समझदार कहती है तो वो अपने को रोक लेता है। पहली बार उसे बुरा लगा कि मम्मी कोई जरूरी काम से नहीं बल्कि डॉ. जोशी से मिलने गई थी।

बाल मन पर पहली गहरी चोट लगती है की उसकी माँ पूरी उसकी नहीं है– ''ये मम्मी इतना सटकर क्यों बैठी हैं डाक्टर साहब से। ऐसे तो कभी मम्मी किसी के साथ नहीं बैठती। बंटी को बहुत अजीब लग रहा है। अजीब और बहुत खराब भी......। एक मम्मी ही तो उसकी थीं, पर वे भी उन्हीं लोगों में जाकर मिल गई।''[3]

देखा जाए तो यहाँ से बंटी के चरित्र में परिवर्तन आने लगता है। डॉ. जोशी के बच्चों के साथ वह घूमने जाता है वहाँ उसे लगता है माँ पर से उसका एकाधिकार समाप्त हो रहा है। माँ का डॉ. जोशी के पास बैठना, उनसे हँसकर बातें करना बंटी को अच्छा नहीं लगता। बंटी डॉ. जोशी को पिता के रूप में अपना नहीं सकता। उसके पिता तो अजय हैं यह बात वह समझता है फिर वह डॉ. जोशी को पापा कैसे कहे। अधिकार तो वह सिर्फ माँ पर जता सकता है ठीक उसी तरह जैसे अमि और जोत डॉ. जोशी पर जताते हैं–''अमि शोर मचाता रहा, अधिकारपूर्ण स्वर में फरमाइशें करता रहा–पापा ये लेंगे, वो लेंगे? जोत कभी मम्मी से बात करती कभी डॉक्टर साहब से।''[4]

मन्नू भंडारी ने उपन्यास के प्रारम्भ 'जन्मपत्री, बंटी की' में जिस दृश्य का जिक्र किया लगभग वैसा ही यहाँ भी दिखाई देता है, जहाँ बंटी चुप, सबसे अलग और सबसे अकेला खड़ा है। दृश्य है–''नई माँ और पिता के बीच एक बालिका। ड्राईंग रूम में अनेक बच्चे धमा–चौकड़ी मचाए हैं–उन्मुक्त और निश्चित बारी–बारी से सब सोफे पर चढ़कर नीचे छलांग लगा रहे हैं। उस बच्चे का नंबर आता है। सोफे पर चढ़ने से पहले वह अपनी नई माँ की ओर देखती है। माँ शायद उसकी ओर देख भी नहीं रही, पर उन अनदेखी नज़रों में भी जाने ऐसा क्या था कि सोफे पर चढ़ने के लिए बच्ची का ऊपर उठा हुआ पैर वापस नीचे आ जाता है। बच्ची सहमकर पीछे हट जाती है।''[5]

आज युग तेजी से बदल रहा है, जीवन में जैसी आपा–धापी है उसमें शकुन भी यदि ठहराव चाहती है तो गलत नहीं है। लेकिन बच्चे की मनोदशा भी अपनी जगह सही है। अपने घर में जिस अधिकार से वह रहता आ रहा है डॉ. जोशी के घर में नहीं रह सकता। शकुन के घर में काम करने वाली फूफी भी जानती है कि बंटी को डॉक्टर के घर जाना अच्छा नहीं लगता। वह बंटी के व्यवहार में आ रहे परिवर्तन

35

को देख रही है, किन्तु शकुन को ये सब नजर नहीं आ रहा। यहाँ तक कि जब शकुन शादी का फैसला करती है तब भी फूफी शकुन को आगाह करती है बंटी के लिए–"जवानी यों ही अंधी होती है बहूजी, फिर बुढ़ापे में उठी हुई जवानी। महासत्यानाशी। साहब ने जो किया तो आपकी मट्टी–पलीद हुई और अब आप जो कर रही हैं, इस बच्चे की मट्टी–पलीद होगी। चेहरा देखा है बच्चे का? कैसा निकल आया है, जैसे रात–दिन घुलता रहता हो भीतर ही भीतर।"[6]

फूफी की ये बात शकुन को बुरी लगी थी, कहते भी हैं सच्चाई कड़वी होती है। बंटी माँ के फैसले से भीतर ही भीतर कही कुंठित होने लगा था। शकुन तब नहीं समझ पाई थी या शायद शादी करने की चाह में समझना नहीं चाहती थी। बंटी के लिए फूफी का जाना भी उसके अकेलेपन को और बढ़ा गया। डॉ. जोशी के घर यदि फूफी साथ होती तो शायद वह जितना अकेला हो गया था न होता। नया घर, नये लोग, नया कमरा सब कुछ अनजाना–अपरिचित। "यहाँ तो आसमान भी पहचाना हुआ नहीं लगता, हवा भी पहचानी हुई नहीं लगती।"[7]

बंटी का मन डॉ. जोशी के घर में, उस घर के लोगों में रम नहीं पा रहा है। वहाँ वह अपने–आप को बड़ा असहज महसूस करता। अपने घर में जैसे बिंदास रहता था वहाँ नहीं रह पा रहा था। यही कारण है कि जैसे–जैसे अंधेरा बाहर बढ़ता जाता है उसके मन में भी अंधेरा बढ़ता जाता है, मन डूबता जाता है घर में भरपूर रोशनी है फिर भी बंटी के मन में जाने कैसा डर समाता रहता है। डर से बच्चे धीरे–धीरे रोने लगते हैं वैसे ही उसकी आँखें भी छल–छल हो रही है।

शादी के बाद शकुन ने सोचा नहीं होगा कि बंटी जैसे छोटे बच्चे पर ऐसा असर पड़ेगा। वह जिद्दी, भयभीत, दुःखी, परेशान जाने कैसा–कैसा रहने लगा था। प्रारम्भ में मन्नू जी का वक्तव्य बिल्कुल सही था–जब अजय बंटी को अपने साथ रखने की बात करता है तब मन्नू जी अजय को समझाती हैं– "आप ऐसा नहीं सोचते कि यह गलत होगा? मुझे लगता है कि उसे अपनी माँ के पास ही रहना चाहिए........। इस नाजुक उम्र में वहाँ से वह उखड़ जाएगा और संभवतः यहाँ जम नहीं पाएगा। अब बंटी की स्थिति ऐसी ही थी। वह माँ के साथ होते हुए भी डॉ. जोशी के घर जम नहीं पा रहा था, तो पापा के साथ कलकत्ते में भी कैसे जमेगा।"[8]

अजय अपनी नयी गृहस्थी में खुश था, यह पीड़ा भी शकुन को सालती है। वह सोचती है कि जब बंटी मेरी खुशी में शामिल नहीं तो मैं उसे बाधा भी नहीं बनने दूँगी। अर्थात् शकुन को भी बंटी अब अखरने लगा है। उसे लगने लगा है कि बंटी को उसे परेशान करने में, शर्मिंदा करने में आनन्द आता है। इसलिए भी शकुन चाहने लगती है कि बंटी अब अजय और मीरा के बीच ही दरार बने। शकुन के मन में अजय से बदला लेने की तीव्र इच्छा थी पर ऐसा न हो सकने से वह बंटी से ही बदला लेने लगती है। कहाँ तो वह बंटी को हॉस्टल भेजने के सुझाव मात्र से बौखला उठी थी वही शकुन सिर्फ अजय से कटुता होने के कारण बंटी को अजय के पास भेजने का फैसला तुरंत कर लेती है। ये सोच कर की अजय भी जाने बच्चे के साथ कैसी–कैसी परेशानी आती है। निर्मला जैन के शब्दों में कहें तो–"यानी चिन्ता इस बात की नहीं कि उसके और अजय के बीच चल रही खींचातानी में बंटी पर क्या गुजर रही होगी। शकुन के मन में साफ है क्योंकि बंटी के लिए सेतु बनना सम्भव

नहीं है, इसलिए उसको दरार बनना है, यातना बन जाना है जिसे शकुन डॉ. जोशी के साथ शेयर करना नहीं चाहती। यानी मसला बंटी के हिताहित से ज्यादा शकुन की अपनी सुख–सुविधा का हो जाता है।''[9]

बंटी अपने घर से उखड़ कर हर जगह से उखड़ जाता है। जबकि डॉ. जोशी से शादी कर शकुन अब जिन्दगी का आनन्द लेना चाहती है। बंटी उसके आनन्द में बाधा बनने लगता है। ऐसी स्थिति को मन्नू भंडारी ने 'आपका बंटी' उपन्यास में बड़ी संवेदनशीलता तथा यथार्थ के साथ प्रस्तुत किया है। गोपाल राय के शब्दों में देखें ''दाम्पत्य संबंध का विघटन और नये सिरे से, नये संबंध बनाकर, जीने का आग्रह आधुनिक जीवन की एक सच्चाई है, पर इस स्थिति की जटिलता तब चुनौतीपूर्ण और त्रासद हो जाती है जब इसके बीच कोई संवेदनशील बाल सन्तान आ खड़ी होती है।''[10]

बंटी पहले शकुन के जीवन का आधार था, वही बंटी जब बाधा लगने लगा तो शकुन ने एकाएक फैसला कर लिया कि वह अब अजय के पास रहेगा। जबकि अजय की शादी की खबर सुनी थी तो शकुन ने ही तय कर लिया था कि अब बंटी को कभी अजय के पास नहीं भेजेगी। फिर ऐसा क्या हो गया कि स्वयं शादी करते ही बंटी बाधा बन रहा है उनके जीवन में। शकुन बंटी को अजय के साथ कलकते भेज तो देती है, लेकिन घण्टों छत पर अकेले खड़े–खड़े वह, अपने और बंटी के बारे में सोचती है। इस सोच में ही यह सच उभर कर आता है कि वे बंटी को साधन ही मानते रहें–''सच, हम लोग शायद बंटी को मात्र एक साधन ही समझते रहे। अपने–अपने अहं, अपनी–अपनी महत्वाकांक्षाओं और अपनी–अपनी कुंठाओं के संदर्भ में ही सोचते रहे। बंटी के संदर्भ में कभी सोचा ही नहीं।''[11]

उपन्यास का सच यही है, यही शकुन का आत्मछल भी है। वह हमेशा यही समझती रही कि वह जो कुछ करती है बंटी के भले के लिए ही करती है। शकुन के भले सोचने में भी बंटी का कितना भला हो पाया, कहा नहीं जा सकता। विवाह विघटन, फिर विवाह कर अजय–शकुन के अलग–अलग बसने से कोई सबसे अधिक आहत हुआ तो वह बंटी है। उपन्यास के अन्त तक आते–आते हम देखते हैं कि बंटी कैसा–कैसा हो जाता है। मन्नू जी के ही शब्दों में–''इस पूरी स्थिति की सबसे बड़ी विडंबना ही यह है कि इन संबंधों के लिए सबसे कम जिम्मेदार और सब ओर से बेगुनाह बंटी ही इस ट्रैजडी के त्रास को सबसे अधिक भोगता है।''[12]

अतः अंत में मैं यही कहूँगी कि मन्नू जी का यह उपन्यास चार दशक बाद भी उतना ही प्रासंगिक और समकालीन है। इस उपन्यास में मध्यकालीन जीवन के पारिवारिक विघटन को मन्नू जी ने जिस बारीकी से प्रस्तुत किया है वह लाजवाब है। उपन्यास को पढ़ते–पढ़ते सहृदय पाठक भीतर तक दर्द का अनुभव करता है। राजेन्द्र यादव इस उपन्यास पर टिप्पणी करते हैं–''मध्यवर्ग की आत्मनिर्भर स्त्री कैसे पुरुष (पति–पुत्र) के संबंधों को अपनी तरह पुनर्व्यवस्थित करने की मानसिक और कानूनी यातनाओं से गुजर रही है इसका सबसे कलात्मक उपन्यास था आपका बंटी ....।''[13]

'आपका बंटी' मन्नू ने 70 के दशक में लिखा। जब वह अपने जीवन की कहानी को लिखने लगी तब वे बंटी को याद करते हुए कहती हैं– ''तीन परिवारों में पल रहे बंटी की विभिन्न मानसिक स्थितियाँ मुझे केवल अपनी ओर खींच ही नहीं रही

37

थी बल्कि लगातार उनका दबाव मुझ पर बढ़ता जा रहा था और बढ़ते–बढ़ते स्थिति यहाँ तक पहुँच गई कि वे सारे बंटी अपने–अपने परिवार की सीमाओं को तोड़कर एक सामाजिक समस्या के रूप में खड़े हो गए।[14]

भारतीय स्त्री अपने बच्चों के लिए सब कुछ त्याग देती है, चेहरे पर बिना कोई शिकन लाए। शकुन के चरित्र को देखकर एक बार तो यही लगता है कि वह अपने आप को अधिक महत्त्व दे रही है। जबकि स्त्री को अपने बारे में सोचने का, अपनी मर्जी का जीवन जीने का अधिकार है। लेकिन संस्कारों की जड़ें इतनी गहरी हैं कि वे त्याग, सेवा, यहाँ तक की अपने को होम कर देने, अपने को मिटा देने में ही स्त्रीत्व के गुण, उसकी महानता को मानती है।

शकुन भी तकलीफ में थी। उसकी तकलीफ को किसी ने नहीं समझा, नहीं पहचाना। मन्नू जी 'एक कहानी यह भी' में लिखती है कि शकुन तो हाशिए में जा पड़ी। धारावाहिक रूप में 'आपका बंटी' छपने पर सब जगह चर्चा बंटी की ही होती है। शकुन को जो महत्त्व मिलना चाहिए था वह नहीं मिला।

हमारे संस्कारों में, समाज में यह धारणा ही बनी हुई है कि स्त्री का स्वतंत्र कोई व्यक्तित्व नहीं है। आज से 50–60 साल पूर्व देखें तो यह स्पष्ट दिखाई भी देता है। स्त्री किसी की बेटी, पत्नी, माँ, बहिन, चाची–ताई, बुआ और भाभी ही होती थी। इन रिश्तों से परे भी उसका अपना कोई स्वतंत्र व्यक्तित्व हो सकता है, इस बात का बोध तक नहीं था, न तो स्त्री को न ही उसके परिवार को, न ही समाज को। किंतु जागरुकता, आर्थिक स्वतंत्रता और बाहरी दुनिया से बढ़ते रिश्तों ने स्त्रियों के भीतर इस बोध को जगाया कि रिश्तों से परे भी उसकी अपनी एक स्वतंत्र पहचान है, अपनी अस्मिता है कि वह एक स्वतंत्र जीवंत इकाई है।

शकुन ने जब विवाह का फैसला लिया तो उसके लिए भी यह आसान नहीं रहा होगा। बच्चे की उपेक्षा करके अपने व्यक्तित्व की बात सोचना बहुत कठिन तो है ही साथ ही त्रासद भी। शकुन के जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी ही यही रही कि व्यक्तित्व और मातृत्व के इस द्वंद्व में न वह पूरी तरह व्यक्ति बनकर जी सकी.....न पूरी तरह माँ। आज भी देखें तो यह समस्या और अधिक विकराल ही हुई है, कम होने के बजाय।

मन्नू भंडारी के उपन्यास 'आपका बंटी में जिन समस्याओं को रेखांकित किया है वे आज भी उतनी ही प्रासंगिक है, जितनी तब थी। 'आपका बंटी' के बंटी और शकुन आज हमारे समाज में हजारों दिखाई देते हैं। इस उपन्यास के माध्यम से मन्नू भंडारी ने बाल मनोविज्ञान की गहरी समझ–बूझ का परिचायक दिया है। यह उपन्यास हिंदी औपन्यासिक जगत् में कालजयी है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. निर्मला जैन : स्त्री जीवन : अपनी–अपनी नजर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2011, प1. 177
2. मन्नू भण्डारी : सम्पूर्ण उपन्यास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2002, पृ. 265
3. वही, पृ. 365

4. वही, पृ. 265
5. वही, पृ. 257
6. वही, पृ. 358
7. वही, पृ. 368
8. वही, पृ. 257
9. निर्मला जैन : स्त्री जीवन : अपनी–अपनी नजर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2011, पृ. 177
10. गोपाल राय : हिन्दी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2010, पृ. 341
11. मन्नू भण्डारी : सम्पूर्ण उपन्यास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2002, पृ. 417
12. वही, पृ. 259
13. राजेन्द्र यादव : आदमी की निगाह में औरत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण 2007, पृ. 167
14. मन्नू भण्डारी : एक कहानी यह भी, राधाकृष्ण पेपरबैक्स प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण 2007, पृ. 114

सहायक आचार्य हिन्दी विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राज0)